जीवन चलने का नाम, चलते रहो सुबहो शाम

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशल स्पीकर

दोस्तों नमस्कार मुनव्वर राणा के एक शेर के साथ शुरुआत करना चाहता हूं,

अपने आप को शादाब
करना चाहता है
ये फ़कीर आपको
आदाब करना चाहता
है

पिछले हफ्ते की बात को आगे बढ़ाते हुए आइये कुछ और मोटिवेशनल गानों की तरफ चलते हैं. आज शुरुआत करते हैं एक ऐसे गाने से जो गीतकार आनंद बक्षी साहब की कलम से निकला सर्वश्रेष्ठ गीत कहा जाता है, और जिसकी गिनती हिंदी फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ गीतों में की जाती है द्य फ़िल्म आपकी कसम का किशोरदा का गाया और आरडी बर्मन द्वारा संगीतबद्ध छह मिनट का ये अमर गीत हमें ज़िन्दगी का बहुत कीमती सन्देश देता है कि गया हुआ वक़्त कभी लौटकर नहीं आता इसलिए क़ोई भी फैसला लेने से पहले कई कई बार विचार करना चाहिए अन्यथा पछतावे के सिवाय कुछ बाकी नहीं रह जाता द्य गीत है-

ज़िन्दगी के सफर में गुज़र जाते हैं जो मक़ाम
वो फिर नहीं आते,
आंख धोखा है क्या भरोसा है
दोस्तों शक दोस्ती का दुश्मन है
दिल में अपने इसे घर बनाने न दो
याद में कल तड़पना पड़े ज़िनकी
रोक लो रूठ कर उनको जाने न दो
बाद में चाहे भेजो हज़ारों हज़ारों सलाम
वो फिर नहीं आते
गीत का एक और अंतरा देखिये,
सुबह आती है रात जाती है
वक़्त चलता ही रहता है रुकता नहीं
एक पल में ये आगे निकल जाता है
आदमी ठीक से देख पाता नहीं
और परदे से मंज़र बदल जाता है
एक बार चले जाते हैं जो दिन रात सुबह शाम
वो फिर नहीं आते

आज का दूसरा बेहद प्रेरणा दायी गीत है, फ़िल्म शोर का महेंद्र कपूर, मन्ना डे, श्यामा चित्तर द्वारा गया ये गीत,

जीवन चलने का नाम चलते रहो सुबहो शाम
कि रस्ता कट जायेगा मितरा
कि बादल छट जायेगा मितरा
कि दुख से झुकना ना मितरा
कि इक पल रुकना ना मितरा
हिम्मत अपना दीन धर्म है हिम्मत है ईमान
हिम्मत अल्लाह हिम्मत वाहेगुरु हिम्मत है भगवान

ये कालजयी गीत जिसकी एक एक लाइन मोटिवेशन से भरपूर है, आज भी अत्यंत लोकप्रिय है और हमें हर हाल में चलते रहने की हिम्मत देता है.

एक और बेहद खूबसूरत गीत है फ़िल्म हम दोनों का साहिर लुधियानवी साहब का लिखा गीत 'मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया, हर फ़िक्र को धुएं में उड़ाता चला गया'. हलके फुलके से लगने वाले इस गीत में जीवन का बड़ा ही गहरा दर्शन छुपा है, खासकर इस गाने का एक अंतरा बहुत खास बन पड़ा है,

बर्बादीयों का सोग (शोक) मनाना फजूल था,
बर्बादीयों का जश्न मनाता चला गया

इसी प्रकार फ़िल्म हमराज का साहिर साहब के द्वारा ही लिखा यादगार गीत ना मुंह छुपा के जियो और ना सर झुका के जियो, गमों का दौर भी आये तो मुस्कराके जियो एक बेहद प्रेरक गीत है . अंतरा देखिये

ना जाने कौन सा पल मौत की अमानत हो
हर एक पल की ख़ुशी को गले लगा के जियो

ये दोनों गीत हमें सुख और दुख की परवाह किये बिना हर हाल में ज़िन्दगी के हर एक पल को पूरी शिद्दत से जीना सिखाते हैं. इसी मिज़ाज का अमिताभ बच्चन पर फिल्माया गया ज़मीर फ़िल्म का गाना देखिये, जिसे साहिर साहब ने ही लिखा था-

ज़िन्दगी हँसने गाने के लिए है पल दो पल
इसे खोना नहीं खो के रोना नहीं

इस गीत की यथार्थ को बयां करती दो जबर्दस्त पंक्तियाँ जो नाकामयाबी के दौर में भी हिम्मत न खोने का पैगाम देती हैं,

तेरे गिरने में भी तेरी हार नहीं
कि तू आदमी है अवतार नही

अमिताभ बच्चन की ही फ़िल्म गंगा की सौगंध का अनजान द्वारा सरल भाषा में रचित ये गीत बड़ा ही प्रेरणादायी गीत है जो इंसान को संघर्ष के दिनों में बड़ा हौसला देता है,

चल मुसाफिर तेरी मंज़िल दूर है तो क्या हुआ
आज पाँव तेरा थक कर चूर है तो क्या हुआ

इस गीत की कुछ और प्रेरक पंक्तिया देखिये,

जिंदगी से जो न हारे, वो संवारे ज़िन्दगी
ठोकरें खाकर ही बना आदमी है आदमी
आजमाइश का यही दस्तूर है तो क्या हुआ

फ़िल्म तपस्या का एमजी हशमत का लिखा और किशोर कुमार की दिव्य आवाज़ से सजा, जो राह चुनी तूने उसी राह पे राही चलते जाना रे, हो कितनी भी लम्बी रात दिया बन जलते जाना रे एक बेहद प्रेरक गीत है. गीत की कुछ प्रेरक पंक्तिया हैं,

जीवन के सफ़र में ऐसे भी मोड़ हैं आते
जहाँ चल देते हैं अपने भी तोड़ के नाते
कहीं धीरज छूट न जाये, तू देख संभलते जाना रे
उसी राह पे राही चलते जाना रे

यह गीत दृढ़ संकल्प और सकारात्मकता पर जोर देता है और बाधाओं के बावजूद अपने चुने हुए रास्ते पर आगे बढ़ते रहने का पैगाम देता है. पिछले सप्ताह हमने दोस्त फिल्म के गाड़ी बुला रही है गीत की चर्चा की थी, इसी फिल्म का एक और बेहद मोटिवेशनल गीत है.

आ बता दें तुझे हम कैसे जीया जाता है
दिल पर सह के सितम का तीर भी
पहन के पाँव में जंजीर भी,
रक्स (नृत्य) किया जाता है
आ बता दें तुझे हम कैसे जीया जाता है

फ़िल्म अनाड़ी के लाखो लोगों को प्रेरित करने वाले शैलेन्द्र रचित इस कालजयी गीत की चर्चा के बिना मोटिवेशनल गानों की बात अधूरी ही कही जायेगी,

किसी की मुस्कराटों पे हो निसार
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार
जीना इसी का नाम है

और अंत में बात करते हैं इंदीवर साहब के लिखे फ़िल्म आखिर क्यों के एक कम चर्चित मगर उत्कृष्ट गीत की जो मन की सारी नकारात्मकता को पल में दूर करता है,

एक अंधेरा लाख सितारे,एक निराशा लाख सहारे
सबसे बड़ी सौगात है जीवन, नादां हैं जो जीवन से हारे
दुख से अगर पहचान न हो तो, कैसा सुख कैसी खुशियां
तूफानों से लड़ कर ही तो लगते हैं साहिल इतने प्यारे

मेरी राय में ये मोहम्मद अज़ीज़ का गाया सर्वश्रेष्ठ गीत है. इनके अलावा कुछ अन्य प्रसिद्ध प्रेरणादाई गीत हैं,फ़िल्म अपना देश का गीत रोना कभी नहीं रोना चाहे टूट जाये क़ोई खिलौना, कुछ तो लोग कहेंगे (अमर प्रेम), जीवन में कभी डरना नहीं (खोटा सिक्का), आने वाला पल जानेवाला है(गोलमाल), साथी हाथ बढ़ाना (नया दौर), कहाँ तक ये मन को अँधेरे छलेंगे (बातों बातों में), फकीरा चल चला चल (फकीरा), राही मनवा दुख की चिंता क्यूं सताती है (दोस्ती), रोते रोते हंसना सीखो (अंधा कानून), ऊँचे नीचे रास्ते और मंज़िल तेरी दूर (खुद्दार), ज़िन्दगी की यही रीत है (मिस्टर इंडिया), रोते हुए आते है सब हँसता हुआ जो जाएगा (मुकद्दर का सिकंदर), हर घड़ी बदल रही है रूप ज़िन्दगी (कल हो ना हो) आदि..

नयी फिल्मों की बात करें तो चक दे इंडिया (चक दे इंडिया), कर हर मैदान फतह (संजू),भाग मिल्खा भाग(भाग मिल्खा भाग) दंगल (दंगल),लक्ष्य तो हर हाल में पाना है (लक्ष्य)आदि गाने इस श्रेणी में रखे जा सकते हैं. आज के वक़्त में जब लगातार चारों तरफ युद्ध और तबाही की, दुर्घटनाओं की, राजनैतिक संघर्ष व कुंठाओं की खबरें हमें क्षुब्ध कर रही हैं और हर तरफ निराशा का माहौल है ऐसे में इस तरह के गीत अंधकार में उजाले की किरन की तरह सुकून देते हैं.

मुझे यकीन है कि उपरोक्त गीतों को सुनकर आप जरूर मोटिवेटेड हुए होंगे, आज के लिए इतना ही, अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी एक नये विषय पर बात होगी, तब तक ऊपर वर्णित गानों को सुनते रहिये और ज़िन्दगी में हमेशा चलते रहिये,आगे बढ़ते रहिये और अब नवाज़ देवबंदी के इस शेर के साथ मुझे इज़ाज़त दीजिये

दो चार कदम चलने को चलना नहीं कहते
जो मंज़िल तक न पहुंचे उसे रास्ता नहीं कहते.

रिहाना के घर आई नन्ही परी तीसरी बार बनीं मां

अंतरराष्ट्रीय पॉप सिंगर और ग्रैमी अवॉर्ड विजेता रिहाना तीसरी बार मां बन गई हैं. उन्होंने और उनके पार्टनर, रैपर एएप रॉकी ने एक बेटी का स्वागत किया है. इस गुड न्यूज़ को रिहाना ने खुद इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट के जरिए अपने फैंस के साथ साझा किया.

इंस्टाग्राम पर दी खुशखबरी- रिहाना ने बताया कि उनकी बेटी का जन्म 13 सितंबर को हुआ, और उसका नाम रॉकी आयरिश मेयर्स रखा गया है. यह नाम उनके पार्टनर एएप रॉकी के असली नाम रकीम मेयर्स से प्रेरित है. रिहाना ने जो तस्वीर पोस्ट की, उसमें वह अपनी बेटी को गोद में लिए हुए हैं, जबकि दूसरी तस्वीर में पिंक बॉक्सिंग ग्लव्स नजर आ रहे हैं. इस पोस्ट को कुछ ही घंटों में लाखों लाइक्स मिल गए, जिससे पता चलता है कि उनके चाहने वालों की संख्या कितनी बड़ी है.

परिवार में %आर% नाम की परंपरा जारी- रिहाना और एएप रॉकी के पहले से ही दो बेटे हैं - रायट और आरजेडए. अपनी बेटी का नाम रॉकी आयरिश मेयर्स रखकर उन्होंने अपने परिवार में %ऋ% नाम की परंपरा को आगे बढ़ाया है. रिहाना ने इस साल मेट गाला में अपने बेबी बंप को फ्लॉन्ट करते हुए अपनी तीसरी प्रेग्नेंसी की खबर को कन्फर्म किया था. उनकी दूसरी प्रेग्नेंसी 2023 में सुपर बाउल हाफटाइम शो के दौरान सामने आई थी.

रिहाना की चाहत हुई पूरी- दो बेटों की मां रिहाना की इच्छा थी कि उनकी एक बेटी हो, और अब उनकी यह चाहत भी पूरी हो गई है. रिहाना का असली नाम रॉबिन फेंटी है. उनकी कुल संपत्ति एक बिलियन डॉलर से अधिक है, और फोर्ब्स के अनुसार, वह एक अरबपति सिंगर हैं.

वरिष्ठ कलाकारों को सम्मानित होते देखना प्रेरणादायक : कंगना रनौत

मंगलवार को 71वें राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में अभिनेता-राजनेता कंगना रनौत ने साउथ के सुपरस्टार मोहनलाल को दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर अपनी खुशी जाहिर की. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने यह पुरस्कार उन्हें नई दिल्ली में प्रदान किया.

कंगना रनौत ने %दृश्यम% अभिनेता की सिनेमा जगत में प्रतिष्ठित विरासत की प्रशंसा की. उन्होंने कहा, मोहनलाल जी इतने प्रसिद्ध अभिनेता हैं. वह एक सुपरस्टार हैं. राष्ट्रीय स्तर पर मोहनलाल को यह पुरस्कार मिलना, उनके काम का ऐसा प्रोत्साहन और पहचान, किसी भी कलाकार को बहुत अच्छा लगेगा. हमें भी अपने वरिष्ठों को सम्मानित होते देखकर अच्छा लगता है.

मलयालम सिनेमा को किया समर्पित

चार दशकों से अधिक समय तक सिनेमा में काम करने के बाद, दादासाहेब फाल्के चयन समिति ने भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए मोहनलाल को इस पुरस्कार के लिए चुना. पुरस्कार लेने के बाद मोहनलाल ने पूरे मलयालम सिनेमा जगत को धन्यवाद दिया और यह पुरस्कार उन्हें समर्पित किया, जिसे उन्होंने फिल्म उद्योग की विरासत, रचनात्मकता और लचीलेपन के लिए एक सामूहिक श्रद्धांजलि बताया.

मोहनलाल ने कहा, यह पल सिर्फ मेरा नहीं है; यह पूरे मलयालम उद्योग का है. मैंने कभी ऐसा दिन आने का सपना नहीं देखा था, और मैं इस पुरस्कार को हमारे उद्योग के अग्रदूतों और हमारे प्रशंसकों की ओर से स्वीकार करता हूँ. उन्होंने जूरी के सदस्यों और भारत सरकार को भी धन्यवाद दिया.

65 वर्षीय मोहनलाल दादासाहेब फाल्के पुरस्कार के सबसे कम उम्र के प्राप्तकर्ता हैं. वह इस पुरस्कार को जीतने वाले मलयालम फिल्म उद्योग के दूसरे कलाकार हैं, पहले अडूर गोपालकृष्णन थे.

समीर ने आर्यन खान की वेब सीरीज पर ठोका 2 करोड़ का मानहानि का मुकदमा

पूर्व नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो अधिकारी समीर वानखेड़े ने आर्यन खान द्वारा निर्देशित नेटफ्लिक्स सीरीज द बाईस ऑफ बॉलीवुड** के खिलाफ दिल्ली उच न्यायालय में ?2 करोड़ का मानहानि का मुकदमा दायर किया है. वानखेड़े ने आरोप लगाया है कि इस सीरीज में उनका अपमानजनक और दुर्भावनापूर्ण चित्रण किया गया है, जिससे उनकी पेशेवर प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा है.यह सात-एपिसोड वाली सीरीज, जो 18 सितंबर को रिलीज हुई थी, ने अपनी रिलीज़ के बाद से ही विवादों को जन्म दे दिया था. वानखेड़े ने अपनी याचिका में दावा किया है कि सीरीज को जानबूझकर उनकी छवि खराब करने के इरादे से बनाया गया है, खासकर जब आर्यन खान से जुड़े मामले की सुनवाई अभी भी चल रही है.

सीरीज के पहले एपिसोड में, एक जोशीला अधिकारी, जो ड्रग्स के खिलाफ युद्ध की बात करता है, बॉलीवुड की एक पार्टी में घुसता है. दर्शकों ने तुरंत इस किरदार के पहनावे (सफेद शर्ट और काली पैंट), हेयरस्टाइल और शारीरिक बनावट को समीर वानखेड़े से जोड़ दिया. याचिका में एक दृश्य का भी उल्लेख है, जहाँ अधिकारी एक व्यक्ति को सिगरेट पीते देखकर छोड़ देता है क्योंकि वह फिल्म उद्योग से नहीं है, लेकिन दूसरे व्यक्ति को सिर्फ इसलिए गिरफ्तार कर लेता है क्योंकि वह इंडस्ट्री से है और केवल शराब पी रहा है. सोशल मीडिया पर इसे 2021 के आर्यन खान ड्रग मामले पर तंज माना जा रहा है.

वानखेड़े ने अपनी याचिका में इस चित्रण को झूठा, दुर्भावनापूर्ण और अपमानजनक बताया है, जो एंटी-ड्रग एजेंसियों की छवि को धूमिल करता है और जनता का विश्वास कमजोर करता है. उन्होंने ?2 करोड़ का मुआवजा मांगा है और इसे टाटा मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल को दान करने का प्रस्ताव भी रखा है. इसके अलावा, याचिका में एक और दृश्य का जिक्र है जहाँ किरदार सत्यमेव जयते कहने के तुरंत बाद अश्लील इशारा करता है.

कभी देश के खिलाफ नहीं जाऊँगा :दिलजीत

हाल ही में भारत-पाकिस्तान मैच के बाद अपनी फिल्म सरदार जी 3 को लेकर हुए विवाद पर अभिनेता-गायक दिलजीत दोसांझ ने आखिरकार अपनी चुप्पी तोड़ दी है. एक संगीत कार्यक्रम के दौरान दिलजीत ने भीड़ को संबोधित करते हुए कहा कि उनकी फिल्म की शूटिंग पहलगाम आतंकी हमले से पहले हुई थी, जबकि मैच बाद में खेला गया था. उन्होंने दर्शकों से संक्षिप्त भाषण की अनुमति ली, जिसके कई वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आए हैं.

दिलजीत ने कहा, जब मेरी फिल्म सरदार जी 3 फरवरी में बनी थी, तब मैच खेले जा रहे थे. लेकिन फिर दुखद पहलगाम आतंकी हमला हुआ. तब से, हम हमेशा प्रार्थना करते रहे हैं कि आतंकवादियों को सख्त से सख्त सजा मिले. एक अंतर है क्योंकि मेरी फिल्म हमले से पहले शूट हुई थी, और मैच बाद में खेला गया था.

दिलजीत ने जोर देकर कहा कि वह कभी भी देश के खिलाफ नहीं जाएंगे, जिस पर दर्शकों ने जोरदार तालियों और जयकारों के साथ प्रतिक्रिया दी. उन्होंने कहा, मेरे पास कहने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन मैंने चुप रहना और इसे अपने अंदर ही रखना चुना. मैं ऐसा नहीं करना चाहता.

दिलजीत दोसांझ की सरदार जी 3 को लेकर विवाद पाकिस्तान की अभिनेत्री हानिया आमिर की कास्टिंग के कारण शुरू हुआ था. यह फिल्म, जो 27 जून को विदेशों में रिलीज हुई थी, पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच भारी विरोध का सामना कर रही थी. फिल्म बिरादरी, स्नड्ढद्धष्टश्च और सोशल मीडिया से बड़े पैमाने पर आलोचना के बाद, सरदार जी 3 के निर्माताओं ने घोषणा की है कि वे अपनी फिल्म को भारत में रिलीज नहीं करेंगे.

काम के मोर्चे पर, दिलजीत दोसांझ जल्द ही बॉर्डर 2 में दिखाई देंगे, जिसमें सनी देओल, वरुण धवन और अहान शेट्टी भी हैं.

धर्मेंद्र हेमा मालिनी के सम्मान में बन जाते हैं शाकाहारी : ईशा

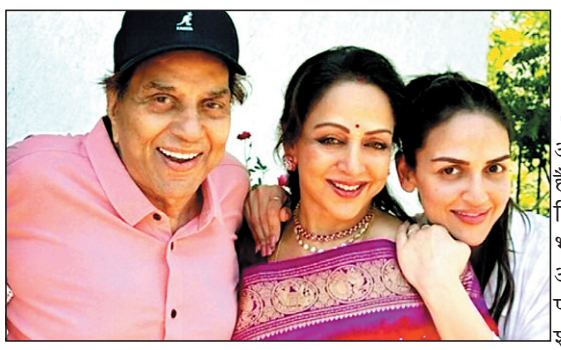

बॉलीवुड अभिनेत्री ईशा देओल ने हाल ही में अपने परिवार की खान-पान की आदतों के बारे में खुलासा किया है. एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि उनकी बेटियां दक्षिण भारतीय व्यंजनों की शौकीन हैं और उनके पिता धर्मेंद्र, अपनी पत्नी हेमा मालिनी के सम्मान में शाकाहारी बन जाते हैं.

ईशा ने खुलासा किया कि धर्मेंद्र, हेमा मालिनी की पसंद का बहुत सम्मान करते हैं. जब भी वे हेमा मालिनी के साथ होते हैं, वे मांसाहारी भोजन नहीं करते हैं. ईशा ने बताया, जब हम कहीं यात्रा करते हैं, तो हम उन्हें कोई नॉन-वेज डिश खाते हुए देखते हैं. और जब वे ऐसा करते हैं, तो वह दूसरे कमरे में जाकर खाते हैं, क्योंकि मां को उसकी गंध पसंद नहीं है. ईशा ने कहा कि उन्होंने अपनी मां और पिता को शूटिंग के दौरान भी देखा है और इन प्यारे पलों को महसूस किया है.

ईशा ने अपनी बेटियों की खाने की आदतों के बारे में भी बताया. उन्होंने कहा, मैं दक्षिण भारतीय खाना खाकर बड़ी हुई हूँ. मेरा मुख्य भोजन इडली, सांभर और डोसा है. अब मेरी बेटियों को भी यह पसंद है. वे हफ्ते में कम से कम तीन बार हमारे कुक से इडली, सांभर और चटनी बनाने के लिए कहती हैं.

दूसरा मौका हमेशा जीवन में बदलाव लाता है : अनुपम

अभिनेता-निर्देशक अनुपम खेर की फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' 26 सितंबर को एक बार फिर सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है. साहस, ऑटिज्म और भारतीय सशस्त्र बलों की थीम पर आधारित इस फिल्म में शुभांगी दत्त मुख्य भूमिका में हैं, जबकि बोमन ईरानी, जैकी श्रॉफ, करण टैकर और अरविंद स्वामी जैसे कलाकार भी अहम किरदारों में नजर आएंगे.

शुभांगी दत्त ने फिल्म के दोबारा रिलीज होने पर उत्साह जताते हुए कहा, दो महीने के भीतर दूसरी बार रिलीज का मौका मिलना बेहद खास है. ऐसा लगता है जैसे हम शूटिंग और प्रमोशन के उन दिनों को फिर से जी रहे हैं. उन्होंने हॉलीवुड अभिनेता रॉबर्ट डी नीरो की तारीफ को भी याद किया, जिन्होंने उनके अभिनय को 'उत्कृष्ट' बताया था.

अनूपम खेर ने फिल्म को दोबारा सिनेमाघरों में लाने के पीछे अपने जीवन के अनुभव साझा किए. उन्होंने कहा, मैं इसे दोबारा रिलीज नहीं कह रहा, बल्कि 'सिनेमाघरों में फिर से' कह रहा हूं. मेरे जीवन में जब भी दूसरा मौका मिला, चीजें बेहतर हुईं. मेरे लिए कोशिश करना सबसे जरूरी है.

खेर ने अपनी पहली फिल्म 'सारांश' का जिक्र करते हुए बताया कि जब उन्हें उससे हटाने की कोशिश की गई थी, तब उन्होंने संघर्ष कर दूसरा मौका हासिल किया था. उन्होंने कहा, 'तन्वी द ग्रेट' की पहली रिलीज के बाद, जब बॉक्स ऑफिस पर इसका प्रदर्शन अपेक्षानुसार नहीं रहा, तब हमने 10,000 से अधिक स्कूलों में इसकी स्क्रीनिंग की. दुबई और देश के कई शहरों में भी इसे दिखाया गया. दर्शकों से मिला प्यार अद्भुत था, इसलिए मैंने इसे दोबारा सिनेमाघरों में लाने का फैसला किया. यह फिल्म जल्द ही ओटीटी पर भी आएगी, लेकिन तब तक कोशिश करने में क्या हर्ज है?

फिल्म एक युवा लड़की तन्वी (शुभांगी दत्त) की प्रेरणादायक कहानी है, जो अपनी मां और दादा (अनूपम खेर) के साथ रहती है.